IMPACT FACTOR 5.397 (SJIF USA)

बिहार शोध समागम BIHAR SHODH SAMAAGAM

Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 3, Issue 4, October-December, 2025
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
https://doi.org/10.5281/zenodo.20596578

ISSN : 3048-6971 (ONLINE)

मृदुला गर्ग कृत 'वसु का कुटुम' : एक तात्विक विवेचन

प्रीति प्रिया दास
शोधार्थिनी, हिन्दी विभाग
रेवेंशॉ विश्वविद्यालय
ओड़िशा, कटक- 753003, भारत
E-mail : pritipriya0981@gmail.com

मृदुला गर्ग द्वारा रचित 'वसु का कुटुम' एक लंबी कहानी तथा लघु उपन्यास है । यह कृति इतिहास में एक 'प्रतिरोधी स्वर' के रूप में उभरती है और समकालीन विमर्शों की गहन पड़ताल करती है । सन् 2016 ई. में प्रकाशित यह लेखन केवल कल्पना पर आधारित नहीं है, बल्कि लेखिका के प्रखर 'अनुभव-बोध' और जीवनानुभवों की ठोस आधारशिला पर निर्मित है । लेखिका एक साक्षात्कार के दौरान कहती हैं- "जिस समाज में हम रहते हैं, वहां बहुत-सी चीज़ों से हमारी चेतना निर्मित होती है । आप जब किसी चीज से असंतुष्ट होते हैं, उसे नकारते हैं तो आपकी मनोभूमि में द्वंद्व की स्थिति उत्पन्न होती है, नया विचार आता है । नकार के बिना कोई सरोकार नहीं होगा । लेखक की जीवन-दृष्टि बदलती रहती है । उसमें द्वंद्व की स्थिति उत्पन्न होती है और वह परिवर्तन चाहता है । उसी से व्यवस्था बदलती है और आप साहित्य रचना करते हैं । विचारधारा अनुभव और अध्ययन से निर्मित चेतना का ही अंश होती है ।"[1]

'वसु का कुटुम' कहानी दिल्ली के बहुचर्चित 'निर्भया-कांड' की पीड़िता को केंद्र में रखकर रची गई है, जिससे 'दामिनी' पात्र का निर्माण हुआ है । बलात्कार के बाद पीडिता के जीवन-संघर्ष और उसके प्रति समाज के व्यवहार को एक नवीन दृष्टिकोण के साथ प्रस्तुत किया गया है । कहानी की नायिका 'दामिनी' है । प्रायः यह देखा जाता है कि बलात्कार के शिकार हुई लड़की मानसिक रूप से टूट जाती है, स्वयं को भावनात्मक रूप से खंडित महसूस करती है और उसका आत्मविश्वास इस कदर गिर जाता है कि वह अपने आप को एक जीवित इकाई के बजाय केवल एक 'भुक्तभोगी' समझने लगती है । लेकिन 'वसु का कुटुम' की 'दामिनी' इस साँचे को तोड़ती है । वह अपने साथ हुई क्रूरता को अपनी नियति के रूप में स्वीकार नहीं करती । लेखिका ने इस कहानी के जरिए सामाजिक यथार्थ को उजागर किया है । यह कहानी रूढ़िवादी सोच का खंडन, व्याप्त भ्रष्टाचार का पर्दाफाश और बलात्कार के शिकार लड़कियों का मनोबल बढ़ाने में मदद करती है ।

कहानी के आरंभ में बी.के. सपोत्रा नामक एक बिल्डर सभी नियमों का उलँघन करते हुए मनमाने ढंग से भवन के निर्माण का कार्य करता है । इस अनैतिक निर्माण प्रक्रिया के दौरान आम लोगो को होने वाली परेशानियों की उसे जरा भी परवाह नहीं है । उसने वह जमीन 'चमनदास' के बेटों से खरीदी है । 'चमनदास' की मृत्यु के उपरांत, उसके बच्चे अपनी माँ की सलाह के बिना, उसकी उपस्थिति को अनदेखा कर और उनकी चुप्पी को सहमति मानकर पुराने घर को बी.के. सपोत्रा को बेच देते हैं । मृदुला जी लिखती हैं- "विधवा की अनकही मंजूरी से बेटों ने घास के लॉन और सब्जी-फूल की क्यारी समेत घर बिल्डर को बेंच दिया । चार तल्लों में से दो तल्ले दोनों बेटों के नाम होने वाले थे । बेवा का क्या था, दोनों में से किसी के मकान में पड़ी रहती ।"[2] वस्तुतः आज भी हमारे समाज में लोग स्त्री और विशेषकर विधवा स्त्री के प्रति असंवेदनशील हैं तथा उनके अधिकारों की अनदेखी करते हैं । इस अंश में 'चमनदास' के बेटों के व्यवहार में चरम संवेदनहीनता दिखाई गई है । लेखिका बहुत ही बारीकी से इस मनोवैज्ञानिक टिप्पणी को प्रस्तुत किया है कि माँ के 'मौन' को उनकी 'सहमति' मान लेना, जो भारतीय समाज में विधवाओं की दयनीय स्थिति को परिभाषित करता है । यह कहानी

एक विधवा माँ के दर्दनाक अनुभव को केंद्र में रखकर परिवार के भीतर निहित शोषण और पुरुषवादी वर्चस्व को उजागर करती है । किस प्रकार एक बुजुर्ग महिला के त्याग और अस्तित्व को अनदेखा कर उसे उसके ही घर से बेदखल कर दिया जाता है, इसका सजीव चित्रण इस कहानी में हुआ है ।

बिल्डर 'सपोत्रा' कानून और निर्माण संबंधी सभी नियमों की अनदेखी करते हुए मनमाने ढंग से निर्माण कार्य करता रहता है । आस-पास के बाशिन्दे भी धूल-मिट्टी से हो रही परेशानियों को सहने के लिए मजबूर हों क्योंकि वे अपने कानूनी अधिकारों के प्रति अत्यधिक उदासीन हैं । किसी में भी विरोध करने का साहस नहीं है, क्योंकि वे जानते हैं कि- "ऐतराज करने से कुछ होने वाला है नहीं । ...पुलिस वाले आएँगे । डाँटेंगे-डपटेंगे और रिश्वत लेकर चलते बनेंगे ।"[3] लोग इर-सहम कर व्याप्त भ्रष्टाचार के सामने नतमस्तक होकर जी रहे हैं । किसी में विरोध करने का साहस नहीं और लोग इसके आदी हो चुके हैं । इस कॉलोनी में नायिका 'दामिनी' रहने के लिए आती है । वह गलत को बेझिझक गलत कहने वाली स्त्री है । सामान्यतः यह माना जाता है कि यदि किसी स्त्री के साथ बलात्कार या किसी भी अन्य प्रकार की प्रताड़ना होती है, तो वह पूरी तरह टूट जाती है । वह स्वयं को दृढ़ नहीं बना सकती । वह सामान्य जीवन जीने का साहस सदा के लिए खो बैठती है । लेकिन 'दामिनी' एक जागरूक स्त्री है, जो बलात्कार की शिकार होने के बाद भी पुनः साहस जुटाकर कर समाज के समक्ष आत्मविश्वास के साथ खड़ी होती है । उसके इसी साहसी स्वभाव के कारण, उसके आस-पास के लोग उसके साथ हुई घटना को नकार देते हैं । इस कहानी के माध्यम से लेखिका ने समाज के संभ्रांत वर्ग पर करारा व्यंग्य किया है । ये वे लोग हैं जो खुद को सभ्य कहते हैं, किन्तु उनकी संवेदनशीलता अत्यंत सीमित है । वे यह तय करना चाहते हैं कि न्याय किसके साथ हुआ है और किसके साथ नहीं । वे पीड़िता के दुखों को उसके व्यवहार से तौलते हैं और यह स्वीकार करने में असमर्थ हैं कि एक बलात्कार की शिकार महिला भी साहसी, मुखर और सामान्य जीवन जीने वाली हो सकती है । समाज में महिलाओं का बोलना, आवाज उठाना या विरोध करना अक्सर 'झगड़ालू' होने का पर्याय मान जाता है । लेखका यहाँ यह स्पष्ट करना चाहती है कि पीड़िता का स्वभाव या उसका व्यक्तित्व उसके साथ हुए अपराध की गंभीरता को कम या ज्यादा नहीं करता । समाज बलात्कार को एक ऐसी घटना मानता है जो महिला को हमेशा के लिए तोड़ देती है । जब कोई महिला इस सिद्धांत को चुनौती देती है, तो समाज उसे स्वीकार नहीं कर पाता । कहानी में दिए गए उद्धरण विचारणीय है- "सुनने में आया था कि उस औरत के साथ बलात्कार हुआ था पर कॉलोनी के भद्र जन मानने को तैयार नहीं थे । वे जानते थे, या कम-से-कम सोचते थे कि जानते हैं कि बलात्कृत औरत डरी-सहमी रहती है । इस तरह झगड़ा करती नहीं घूमती । वह भी रौबदार मर्दों से । कुछ लोग कहते थे, झगड़ालू नहीं, जांबाज है । मगर जांबाज भी नहीं हुआ करतीं ज्यादतीशुदा औरतें । यह मानना था सभी का, मर्द हों या औरतें ।"[4] अतः यह गद्यांश इस कड़वे सच को उजागर करता है कि समाज बलात्कार जैसे जघन्य अपराध को समझने की बजाय पीड़िता की 'पवित्रता' और 'व्यवहार' को जांचने में अधिक रुचि रखता है ।

कहानी के पात्र 'राघवन', 'रत्नाबाई', 'नज़मा' पीडिता दामिनी के प्रति सहानुभूति रखते हैं । कहानी की कहानी में राघवन की बेटी 'अर्चना', दामिनी के साथ हुए अत्याचार के खिलाफ आवाज़ उठाती है और आंदोलन में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेती है । परिणामस्वरूप उसको पुलिस द्वारा निसंकोच पीटा जाता है । उसकी माँ 'नीलम' को उसके पिता 'राघवन' लड़की द्वारा चलाई जा रही आंदोलन के बारे में छुपता और झुट भी बोलता है कि नीलम लखनऊ गई है । इस पर 'नीलम' कहती है- "तुम महीनों मुझसे झूठ बोलते रहे । अर्चना उस बलात्कार के विरोध में गलियों-गलियों घूमती रही । पुलिस से पिटती रही । वॉटर कैनन से कुचली जाती रही । बालों से घसीटी जाती रही और तुमने मुझे बतलाया नहीं । झूठ बोल दिया कि वो लखनऊ गई है । कुत्तों का खाना बेचने ।"[5] विवेच्य कहानी के माध्यम से मृदुला गर्ग ने नारी-स्वभाव से जुड़े

रूढ़िवादी मिथकों का विखंडन किया है । इसमें स्त्री पर हो रहे अन्याय को प्रस्तुत करने के साथ-साथ मध्यवर्ग और उच्च-मध्यवर्ग की नारियों की जटिलताओं का सूक्ष्म अंकन किया है । यह केवल घटनाओं का संकलन मात्र नहीं है, अपितु यह गहन मानवतावादी सरोकारों और सामाजिक जागरूकता का जीवंत दस्तावेज़ है । उनकी यह कहानी व्यक्तिगत अधिकारों की प्राप्ति के साथ-साथ 'सामूहिक उत्तरदायित्व' का आह्वान करती है । वे महिलाओं को आह्वान करती हैं कि उनके हक की लड़ाई केवल स्वयं तक सीमित न रहे, बल्कि वह अन्य वंचितों को अधिकार दिलाने की एक 'लोकतांत्रिक प्रक्रिया' बन जाए ।

लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ के रूप में पत्रकारिता, प्रेस और समाचार को स्थान दिया गया है, जिसका कार्य जनता को जागरूक बनाना सामाजिक मुद्दों को निष्पक्षता से प्रस्तुत करना है । लेकिन वर्तमान समय में पत्रकारिता के क्षेत्र में लोग अपनी खबरों को ज्यादा चटपटा बनाने की कोशिश में लगे हैं । टी.आर.पी. पाने की होड़ में पत्रकारिता का स्तर गिरता जा रहा है, जिसे इस कहानी में बखूबी दर्शाया गया है । इस उपन्यास का पात्र 'हिंदीश' एक ऐसा पत्रकार है जो स्वयं को लोकप्रिय बनाने के उद्देश्य से घटना से जुड़े तथ्यों में हेराफेरी कर दर्शकों के सामने प्रस्तुत करता है । आज पत्रकारिता से जुड़े लोगों में समाचार आदि को अधिक रोचक बनाकर पेश कर रहे हैं, जिससे पत्रकारिता की विश्वसनीयता दिन-प्रतिदिन काम होती जा रही है ।

'दामिनी' की तबीयत ज्यादा ख़राब हो जाने पर राघवन, रत्नाबाई तथा नज़मा उसे लेकर अस्पताल पहुँचते हैं । डॉक्टर द्वारा पूछे जाने पर रत्नाबाई खुद को उसकी माँ, नजमा उसकी बहन तथा राघवन को उसका भाई बताते हैं । वे सभी बड़ी ही सहजता से अकेली दामिनी के साथ अपना सम्बन्ध जोड़ लेते हैं । वहीं दूसरी ओर, दामिनी के एन.जी.ओ. की संचालिका 'मीरा राव' दामिनी के इलाज के नाम पर चंदा इकठ्ठा करती है । इलाज से पूर्व ही दामिनी की मृत्यु हो जाती है । जब रत्नाबाई मीरा राव के ऑफिस पहुँचती है, तो वहाँ उसे पता चलता है कि दामिनी की मृत्यु के उपरांत भी उसके नाम पर दान लिया जा रहा है । दामिनी और रत्नाबाई की मृत्यु तथा मीरा राव का भ्रष्टाचार में लिप्त होना वगैरह इन संवेदनहीन और मुनाफाखोर लोगों के लिए केवल सनसनी फैलाने साधन मात्र हैं । कार्यक्रम में हिस्सा लेने के लिए राघवन को भी बुलाया जाता है जो गिन्नी को दान में देने की बात का खुलासा पत्नी के समक्ष हो जाने के भय से कार्यक्रम में जाने से मना कर देता है । बाद में नजमा की सलाह मानकर पत्नी नीलम को सारा वृतांत बता देता है । हिन्दीश, राघवन की पत्नी, नजमा, राम लखन आदि को बारी-बारी अपने कार्यक्रम में बुलाकर चर्चा करवाता है । मीरा राव समेत एन.जी.ओ. के अन्य सभी जवाबदेह सदस्य विदेश भाग जाते हैं । 'हिन्दीश' जब 'मीरा राव' को ढूंढता हुआ दुबई पहुँचता है तो वहाँ वह कबूल करती है कि एन.जी.ओ. का पैसा बी.के.सपोत्रा के बिज़नेस में इन्वेस्ट करती थीं । इसका उन्हें अच्छा-खासा ब्याज दिया जाता था । इस बात से सपोत्रा का बेटा पूरी तरह मुकर जाता है । बाद में यह भी ज्ञात होता है कि सपोत्रा को निर्माण सम्बन्धी क़ानूनी अनुमति कभी मिली ही नहीं । यह हमारे कानून व्यवस्था के लचीलेपन पर एक करारा तमाचा है | नजमा भी मीडिया के नज़मा को अच्छी तरह जानती है और वह उसके सामने बहस के दौरान, उनकी आवश्यकता के अनुरूप हो ख़बरें परोसती रहती है । बाद में चैनलों पर राजनैतिक दलों के प्रतिनिधियों के बीच होने वाली बहस, आरोप-प्रत्यारोप के बीच एन.जी.ओ. तथा सपोत्रा के भ्रष्टाचार, रूपयों के गबन आदि प्रासंगिक मुद्दे अपने आप ही धुआं हो जाते हैं ।

मृदुला गर्ग ने अपनी इस कहानी में मिडिया में व्याप्त 'शोबाजी' की ललक और खबरों की गंभीरता के बजाय लोकप्रियता की भूख को भी उजागर किया है । रत्नाबाई तथा एन.जी.ओ. के घटनाक्रम का विडियो लेकर जब चपरासी 'रामलखन' न्यूज़ चैनल के दफ्तर में जाता है, तब प्रोड्यूसरों के समूह की इस टी. आर. पी के भरपूर मसाले को देखकर

आनंदित हो उठता हैं । उनमें से एक सहयोगी कहता है- "एक दिक्कत है, इसके जो सबसे धांसू दो किरदार थे, वे तो आउट हो चुके हैं । एक वह लड़की, क्या नाम था उसका, दामिनी, जिसके नाम पर चन्दा जमा किया गया... और वह एक बुढिया ... सनसनी पैदा करने के लिए सिर्फ मजमून काफी नहीं होता । सनसनाते हुए किरदार भी चाहिए; वे कहाँ से लायेंगे ?"[6] प्रस्तुत गद्यांश के माध्यम से पत्रकारिता में बढ़ रहे नैतिकता के पतन को उजागर किया गया है ।

प्रस्तुत कहानी भारतीय समाज में व्याप्त आर्थिक विषमता और भ्रष्टाचार जैसे गंभीर मुद्दों पर तीखी टिप्पणी करती है । इसमें समाज के अत्यधिक धनवान वर्ग और आम आदमी के बीच के अंतर को बहुत प्रभावी ढंग से उजागर किया गया है । लेखिका का कहना है संसाधनों का एक बड़ा हिस्सा कुछ गिने-चुने लोगों के हाथों में सिमट गया है । इनके पास इतनी अधिक धन-संपत्ति है कि वह देश की अर्थव्यवस्था में समा नहीं पा रही है, जिसे वे विदेश के 'स्विस बैंक' में जमा कर रहे हैं । यह संपत्ति काले धन का प्रतीक है, जिससे अनुचित उपायों से अर्जित किया गया है । यह कहानी देश की व्यवस्था में मौजूद उन खामियों पर चोट करती है जहाँ अमीर आदमी अपनी बेहिसाब संपत्ति को गोपनीय विदेशी खातों में सुरक्षित रखते हैं ताकि वह देश की निगरानी और कर-प्रणाली से बाहर रहे । लेखिका के अनुसार- "देखिए हमारे मुल्क का हाल । यहाँ पर कुछ लोग इतने अमीर हैं कि उनका पैसा मुल्क के भीतर नहीं समाता । वो उसे ले जाकर स्विस बैंक में रख देते हैं । स्विस बैंक, आपने सुना होगा, वो जहाँ के खाते गोपनीय होते हैं । उनके बारे में किसी को जानकारी नहीं दी जाती। तो हम नहीं जानते किसके पास कितना पैसा है और उसने कितना पैसा स्विस बैंक में दबा रखा है । दूसरी तरफ हम जैसे लोग हैं...."[7] वस्तुतः यह उद्धरण दर्शाता है कि कैसे सत्ता और धन के बल पर जानकारी को जनता से छुपाया जाता है, जिससे जवाबदेही पूरी तरह खत्म हो जाती है । दूसरी तरफ़ आम आदमी, जो मेहनत से कमाता है और देश के प्रति अपनी जिम्मेदारियाँ निभाता है, वह और अधिक गरीब होता जा रहा है । यह समाज में व्याप्त नैतिक पतन और आर्थिक अन्याय को रेखांकित किया गया है । यह सीधे तौर पर उन लोगों पर प्रश्न चिह्न लगाता है जो देश से धन कमा कर विदेशों में छिपाना बेहतर समझते हैं । यह वर्ग राष्ट्र-निर्माण में योगदान देने के बजाय देश को पीछे ले जाता है । अतः यह कहानी एक ऐसी व्यवस्थागत विफलता को प्रस्तुत करती है जहाँ आम जनता कानून का पालन करती है, जबकि अमीर वर्ग अपनी पहुँच और धन के माध्यम से कानून से ऊपर बने रहने में सफल रहता है ।

'वसु का कुटुम' कहानी भारतीय समाज और प्रशासनिक व्यवस्था के कटु यथार्थ पर गहरा कटाक्ष करती है । लोकतंत्र में नियुक्तियों का आधार 'योग्यता' और 'समान अवसर' होना आवश्यक है । परंतु, वर्तमान समय में रिश्वत, पहुंच और सिफ़ारिश के आधार पर अधिकाधिक क्षेत्रों में नियुक्तियाँ दी जा रही हैं । कहानी में समाजसेवा के नाम पर लोगों से मिले पैसों को हड़पने वाली 'मीरा राव' के मामले में मीडिया के सामने बुलाया गया चपरासी कहता है- "हमारे देश में हर नियुक्ति इसी प्रकार होती है । किसी-न-किसी की सिफारिश पर । तो मेरी नियुक्ति भी इसी नियम के अन्तर्गत हुई ।"[8] आलोच्य गद्यांश से यह स्पष्ट होता है कि आम जनता का निष्पक्ष चयन प्रक्रियाओं से विश्वास उठ चुका है । जब समाज यह मान लेता है कि 'सिफारिश के बिना कुछ नहीं होता', तो यह प्रतिभाओं के हतोत्साहित होने का मुख्य कारण बन जाता है । योग्य व्यक्ति जब व्यवस्था में अपनी जगह नहीं बना पाते, तो वे व्यवस्था के प्रति उदासीन हो जाते हैं । यह कथन केवल एक व्यक्ति की नियुक्ति की कहानी नहीं है, बल्कि तत्कालीन समय की भ्रष्ट कार्यप्रणाली का एक सटीक चित्रण है । यदि समय रहते इस प्रक्रिया को नहीं रोका गया, तो यह हमारे प्रशासनिक और सामाजिक ढाँचे को पूरी तरह से खोखला कर देगा ।

विवेच्य कहानी एक कल्याणकारी राज्य और समतामूलक समाज की कमाना करती है । इस कहानी के अनुसार मनुष्य की केवल तीन ही नहीं, बल्कि पांच मूलभूत आवश्यकताएँ (रोटी, कपड़ा, मकान, रोजगार, शिक्षा) और दो बुनियादी

सुविधाएँ (स्कूल, डिस्पेंसरी) अनिवार्य है । ये पाँच मूलभूत अवश्यकताएँ नागरिक के 'गरिमापूर्ण जीवन' के लिए आवश्यक बताई गई हैं- "हर आदमी को रोटी, कपड़ा, मकान मिलना चाहिए । हर आदमी के पास रोजगार होना चाहिए । हर बच्चे को शिक्षा मिलनी चाहिए । हर मोहल्ले में स्कूल होना चाहिए । डिसपेंसरी होनी चाहिए ।"[9] अतः रोजगार केवल आय का साधन नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के आत्म-सम्मान का प्रतीक है । जब हर व्यक्ति रोजगारक्षम होगा, तभी गरीबी का दुष्चक्र टूट पाएगा । यह राष्ट्र की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनता है और समाज में अपराध दर को कम करने में मदद करता है, क्योंकि आर्थिक तंगी अक्सर इंसान को असामाजिक कार्य करने पर बाध्य कर देता है । आर्थिक सशक्तिकरण व्यक्ति में तार्किक सोच विकसित करने और अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होने की क्षमता पैदा करता है । इसके अतिरिक्त, कहानी में शौचालय की प्रतिष्ठा पर विशेष जोर दिया गया है । अधिकांश संक्रामक बीमारियाँ खुले में शौच के कारण फैलती हैं । एक शौचालय न केवल एक सुविधा है, बल्कि यह बीमारियों की रोकथाम का सबसे उत्तम उपाय है । यह एक संतुलित दृष्टिकोण है, जो स्पष्ट करता है कि वास्तविक विकास तभी संभव है जब सरकार समाज की सबसे बुनियादी जरूरतों को प्राथमिकता के आधार पर पूरा करेगा ।

मृदुल गर्ग अपनी कहानी 'वसु का कुटुम' में अत्यंत सरल, सुस्पष्ट और बोलचाल की हिंदी भाषा का प्रयोग किया है । भाषा के प्रवाहपूर्ण होने के कारण पाठक कहानी के भावों और पात्रों की संवेदनाओं से सीधे जुड़ जाते हैं । यह सरलता कहानी को हर आयु वर्ग के पाठकों के लिए सुलभ बनाती है । इसमें संवादों का प्रयोग बहुत ही स्वाभाविक रूप से हुआ है । पात्रों के बीच होने वाली बातचीत उनके चरित्रों को उभारती है । भाषा का यह संवादात्मक रूप कहानी में सजीवता भर देता है, जिससे घटनाएँ आँखों के सामने घटित होती प्रतीत होती हैं । 'वसु का कुटुंब' में लेखिका ने शब्दों के माध्यम से एक ऐसे संसार की रचना की है जो सरल होने के बावजूद भी वैचारिक रूप से अत्यंत प्रभावशाली है । उनकी भाषा पाठक के मन में एक स्थायी प्रभाव छोड़ती है और उन्हें सोचने पर विवश करती है ।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि मृदुला गर्ग द्वारा रचित लंबी कहानी 'वसु का कुटुम' शोषण के मूल कारणों की जड़ पर प्रहार करती है । उनका लेखन आधुनिकताबोध, बौद्धिक ईमानदारी और एक ऐसी स्त्री-दृष्टि का संश्लेषण है, जो स्वायत्तता और सामाजिक सरोकारों के बीच एक सुदृढ़ संतुलन स्थापित करता है । आलोच्य कहानी में आत्मपरकता और स्त्री-अस्मिता का विकासपरक विश्लेषण देखने को मिलता है । इस कहानी का सूक्ष्म अध्ययन करने पर यह तथ्य उद्घाटित होता है कि इसमें स्त्री-पात्र महज़ काल्पनिक सृजन नहीं, बल्कि उनके निजी अनुभवों की 'सृजनात्मक प्रयोगशाला' के जीवंत प्रतिरूप हैं । उनके स्त्री-पात्र पीड़ा के आत्म-विलाप के बजाय अस्तित्व को स्थापित करने की संघर्ष से जूझते प्रतीत होते हैं । यह कहानी समकालीन हिंदी विमर्श में एक ऐसे प्रस्थान बिंदु की भाँति है, जहाँ आधुनिकता की चकाचौंध और यंत्रवत जीवन पद्धति के बीच मानवीय संवेदनाओं के क्षरण को अत्यंत सूक्ष्मता से उकेरा गया है । अतः मृदुला गर्ग का सृजन पारंपरिक विलाप का नहीं, बल्कि सामाजिक सशक्तिकरण का साहित्य है ।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. गर्ग, मृदुला : मेरे साक्षात्कार, किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली- 110002, प्रथम संस्करण-2012, पृष्ठ संख्या- 51
2. गर्ग, मृदुला : वसु का कुटुम (लंबी कहानी), राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली- 110002, प्रथम संस्करण-2016, पृष्ठ संख्या- 20
3. वही, पृष्ठ संख्या- 20
4. वही, पृष्ठ संख्या- 24
5. वही, पृष्ठ संख्या- 74
6. वही, पृष्ठ संख्या- 65
7. वही, पृष्ठ संख्या- 108
8. वही, पृष्ठ संख्या- 85
9. वही, पृष्ठ संख्या- 116